हरियाणवी लोक नृत्यों में संगीत

डॉ. अनु वर्मा
संगीत वादन विभाग
आर्य गर्ल्ज़ कॉलेज, अम्बाला छावनी ।

हरियाणा के लोक नृत्य अपनी संस्कृति और परम्परा के अनुसार अनेक तीज–त्योहारों और फसलों से जुड़े हुए है। ये हरियाणा के संस्कृति को दर्शाने के साथ–साथ लोगो के आपस प्रेम और व्यवहार को भी दर्शाता है। इन नृत्यों में से कोई नृत्य महिलाओ द्वारा किया जाता हैं। तो कोई पुरूषों द्वारा और कोई नृत्य पूरे समूह यानी चार पाँच व्यक्तियो द्वारा किया जाता है। हरियाणा में नृत्य कला वैदिक काल से ही चली आ रही है। और यहाँ पर हरियाणवी नृत्य को विशेष महत्त्व दिया जाता है। और यह हरियाणा की संस्कृति का प्रतीक भी माना जाता है। नृत्य विशेष उत्सव, मौसम के आधार पर किया जाता है। हरियाणा राज्य में बहुत प्रकार के नृत्य किए जाते है। जो निम्नलिखित हैं। इन नृत्य कला से लोगों का मनोरंजन, उमंग, उत्साह के लिए किए जाते है।

धमाल नृत्य :– प्रदेश में पुरुषों का धमाल नामक नृत्य बहुत प्रसिद्ध नृत्य है। इस नृत्य कला में बीनों, खंजरी, तुम्बे, धड़वे, खड़ताल, ढोलक, बांसुरी आते है। यह नृत्य महेन्द्रगढ़ और झज्जर में लोकप्रिय है। चांदनी रात में खुले मैदानों में इसका आयोजन किया जाता है।

मंजीरा नृत्य :– मंजीरा भजन में प्रयुक्त होने वाला एक महत्वपूर्ण वाद्य है, मंजीरा नृत्य भी एक प्रसिद्ध नृत्य है। यह नृत्य मेवात में बड़े–बड़े नृत्यकारों, डफ और मंजीरो के साथ होता है। इसका प्रयोग मुख्य रूप से भक्ति व धार्मिक संगीत में ताल व लय देने के लिए ढोलक तथा हारमो नियम के साथ–साथ होता है।

खेड़ा नृत्य :– इस नृत्य का प्रयोग खुशी के स्थान पर दुःख में किया जाता है। यह किसी की मृत्यु के समय किया जाने वाला नृत्य है। खेड़ा जींद, नरवाना, कैथल, करनाल आदि बागर के क्षेत्रों में बहुत प्रसिद्ध है।

स्वांग नृत्य :– सांग को हिन्दी शब्द में स्वांग कहते है। सांग नृत्य सांग के दौरान दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए सांग कलाकारों द्वारा किया जाता है। इस परंपरा की शुरूआत लगभग 1730 ई0 में हुई थी। यह वीर रस प्रधान नृत्य माना जाता है। यह नृत्य लोक कथाओं, लोक गीत और संगीत के रूप में प्रस्तुत करते है।

तीज का नृत्य :– इस अवसर में स्त्रियाँ सुंदर–सुंदर परिधान धारण करती हैं। इस नृत्य में गायन का आयोजन किया जाता है। और स्त्रियाँ मनोरंजन के लिए नृत्य भी करती है।

फाग :– इस नृत्य का आयोजन प्रदेश में होली के दो सप्ताह पहले किया जाता है। इस नृत्य को रात्रि में स्त्रियों द्वारा किया जाता है। कहीं–कहीं स्थान पर तो इसका आयोजन पुरुषों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य की प्रमुख विषेशता यह है कि इस नृत्य में पुरुष स्त्रियों के नृत्य को नही देखते।

रासनृत्य :– इस नृत्य का संबंध भगवान श्री कृष्ण की रासलिला से जुड़ा हुआ है। नृत्य दो प्रकार से मनाए गए है। तांडव और लास्य। तांडव पुरूश प्रधान नृत्य है और लास्य स्त्री प्रधान नृत्य है। यह नृत्य हरियाणा राज्य के होडल, पलवल तथा बल्लभगढ़ आदि इलाकों में बहुत प्रसिद्ध है।

डफ नृत्य :– यह नृत्य श्रृंगार तथा वीर रस प्रधान होते है। इस नृत्य को ढ़ोल नृत्य नाम से भी जाना जाता है। इस नृत्य का आयोजन बसंत ऋतु में किया जाता है। इस नृत्य को पहली बार वर्श 1969 में गणंतत्र दिवस समारोह मे प्रस्तुत किया जाता है। यह हिमाचल में भी प्रसिद्ध है।

रतवाई नृत्य :– मेवाती राज्यों क्षेत्रों का यह एक सुप्रसिद्ध नृत्य है। नृत्य का आयोजन वर्षा ऋतु में स्त्री पुरूष द्वारा किया जाता है। यह नृत्य गुड़गांव में नुह व फिरोजपुर झिरका के क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय है।

धमाल नृत्य :– गुड़गांव क्षेत्र में प्रसिद्ध है। नृत्य की उत्पति महाभारत के समय के दौरान हुई थी यह नृत्य केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है। ये धमाल की आवाज के साथ गाते और नाचते है। ऐसा कहा जाता है कि लोग इस नृत्य को तब करते है। जब उनकी फसल तैयार होती है। नृत्य के दौरान पुरुष प्रतिभागी एक अर्धचक्र बनाते है और भगवान् गणेश, देवी भवानी और भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु तथा भगवान शिव की पवित्र त्रिमूर्ति के लिए प्रार्थना करते है।

झुमर नृत्य :– नामक एक आभूषण क नाम पर किया जाने वाला नृत्य है। झुमर नृत्य भी हरियाणा के लोकप्रिय लोक नृत्य में से एक है। यह

पारम्परिक नृत्य विषेश रूप से उन युवा लड़कियों द्वारा किया जाता है। जो विवाहित है। नृत्य को ढ़ोलक और थाली जैसे वाद्य यंत्रों की धुन पर किया जाता है और चमचमाते गहनों से सजे रहते है। नृत्यकार इसे कुछ नृत्य को 'हरियाणा गिद्दा' के नाम से भी जाना जाता है।

गुग्गा नृत्य :– इसका नाम संत गुगा के भक्तों द्वारा गुग्गा रखा गया था। हरियाणा का यह पारंपरिक लोक नृत्य, जिसे गुग्गा नृत्य कहा जाता है, विषेश रूप से पुरूषों द्वारा किया जाता है। यह संत गुग्गा की याद में निकाले गए जुलूस में किया जाता है। इस प्रदर्षन में भक्त अपने सम्मान और प्रशंसा में विभिन्न प्रकार के गीत गाकर गुग्गा पीर की कब्र के चारों ओर नृत्य करते है। यह नृत्य भाद्रपद मास में गुग्गा नवमी को मनाया जाता है। भक्तो द्वारा गुग्गा छड़ी के चोरों तरफ बड़ी श्रद्धा के साथ सांरगी वह डेरू की ताल पर नृत्य करते है। इसमें भक्त लंबे बांस पर मोरपंख बांधकर रंगीन धागे वह कपड़े लपेटकर गुग्गा भक्त अपनी गुग्गा छड़ी तैयार करते है और घर–घर घूमकर आतें है।

घूमर नृत्य :– यह एक अनोखा पारंपरिक लोक नृत्य, राज्य के पष्चिमी हिस्सों में मनाया जाता है। राज्य की सीमा क्षेत्र की लड़कियाँ घूमर का प्रदर्षन करती है। ताली बजाने और गाने के बारे में आगे बढ़ते है। लड़कियाँ घूमर वाली आंदोलन में नृत्य करती है। साथ के गीत व्यंग्य हास्य और समकालीन घटनाओं से भरे हुए है, जबकि नृत्तेक जोड़े में घूमते है। यह नृत्य होली, गणगौर पूजा और तीज जैसे त्योहारों के अवसर पर किया जाता है।

छठि नृत्य :– यह नृत्य नवजात शिशु का जन्म खुशी के साथ मनाया जाता है। छठि नृत्य भी एक अनुष्ठानिक नृत्य है। जिसे उसी अवसर पर गाया जाते है। केवल लड़के जन्म के छठि दिन। उत्सव के अंत में उबला हुआ गेहूँ और चना सभी सदस्यों को वितरित किया जाता है। जो प्रदर्शन के लिए उपस्थित होते है।

रास लीला नृत्य :– रास लीला में रास शब्द का अर्थ है नृत्य । यह हरियाणा का पारंपरिक लोक नृत्य राज्य फरीदाबाद जिला के ब्रेजा क्षेत्र के लोगों के बीच आम था। इसमें विभिन्न प्रकार के गीत जो भगवान कृष्ण की प्रशंसा में है। रास लीला ईश्वर के साथ आध्यात्मिक आंनद का नृत्य बन जाती है। जो दुनिया को अपने स्वयं के रूप में नृत्य गोपियों के रूप में

व्याप्त होती है। नृत्य के लिए वेशभूशा रंगीन, कशीदाकारी और उस पर दर्पण होते है।

हरियाणा के लोक नृत्य राज्य के सम्रद्ध लोकगीत और परपंरा को प्रदर्षित करते है। और लोगों की सांस्कृतिक पृष्ठ–भूमि को दर्शाते है। इन लोक नृत्यों में लोगों में एकता और एकजुटता की भावना पैदा होती है। चाहे वह त्यौहार, मेले या विवाह जन्म या यहाँ तक फसल के मौसम जैसे समारोह हों, लोग एक साथ नृत्य और आंनद के लिए आते है।

हरियाणा में नृत्य कला वैदिक काल से चली आ रही है और यहाँ पर हरियाणवी नृत्य को विशेष महत्व दिया जाता है और इसे हरियाणा की संस्कृति का प्रतीक भी माना जाता है।